DOI: 10.51220/hjssh.v7i1.8

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 7 pp.53 - 58, December, 2012, ISSN. 0975 - 9891

सुमित्रानन्दन पंत की "पाँच कहानियाँ":सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

राखी उपाध्याय

हिन्दी विभाग,

डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज, देहरादून उत्तराखण्ड

drrakhi_418@rediffmail.com

Received: 19-06-2012 **Revised: 29-09-2012** **Accepted: 01-11-2012**

ABSTRACT

छायावादी कवि सुमित्रनन्दन पंत ने गद्य साहित्य में कहानी विधा में अपनी उत्कृष्ट पहचान बनाई है। उनके द्वारा लिखित 'पाँच कहानियाँ' में तत्कालीन समाजिक और पारिवारिक मर्यादाओं का चित्रण बखूबी हुआ है। उनकी प्रत्येक कहानी पुरातन रूढ़ियों, अन्ध विश्वासों को त्यागकर नवीन विकासवादी विचारधारा की ओर अग्रसारित होती है।

KEY WORDS: छायावाद,गद्य साहित्य, सुमित्रानन्दन पंत, पाँच कहानियाँ, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में गद्य साहित्य को नया जीवनगत दृष्टिकोण, नए विषय, नई परिस्थितियाँ, नई समस्याएँ और नए समाधान मिले। पाश्चात्य विचारधारा भारतीय विचारों को प्रस्तावित कर रही थी। भारतेन्दु युग की प्रेरणा, पश्चिम का प्रभाव और सम-सामयिक परिस्थिति ने गद्य-साहित्य को अभूतपूर्व बल प्रदान किया और नए ढाँचों में ढालकर वैभव सम्पन्न होने का अवसर प्रदान किया।

द्विवेदी जी ने हिन्दी गद्य की अनेक समस्याओं को हल करने के लिए गद्य को नवीन दृष्टि प्रदान की जो साहित्य के व्यापक क्षेत्र में प्रवृत्त हुई, जिससे हिन्दी के सभी रूपों का विकास हो सका। वे हिन्दी गद्य में एक व्यवस्था और संयम के पोषक थे। सन् 1915 से 1935 ई0 तक के युग ने हिन्दी साहित्य को एक नया मोड़ दिया, जिसे हिन्दी साहित्य में छायावादी काल के नाम से जाना जाता है। छायावादी कवि अपनी काव्य कृतियों के श्रेय को लेकर चर्चित तो हुए ही साथ ही उनके द्वारा समय-समय पर लिखी गई गद्य कृतियों से भी हिन्दी साहित्य में चार चाँद लगे। छायावाद के कीर्ति स्तम्भ कविवर सुमित्रानन्दन पंत उत्कृष्ट गद्यकार भी थे। समय-समय पर उनके द्वारा प्रस्तुत पुस्तकों में गद्यात्मक भूमिकाएँ, आत्मकथ्य, विचार-सम्पदा आदि काव्येत्तर (गद्य) साहित्य के रूप में लिया जा सकता है।

पंत ने गद्य-पद्य में विशेषतः कथाभूमि पर उतर कर सामाजिक धरातल पर दृष्टिपात किया, इन वास्तविक चित्रों में लौकिकता से परे कल्पना का पुट है साथ ही भावुकता का सौन्दर्य भी। पंत ने कथा के क्षेत्र में मात्र 'पाँच कहानियाँ' लिखी, परन्तु शिल्प और कथ्य की दृष्टि से इन पाँच कहानियों का विशिष्ट एवं

@SHARAD

महत्वपूर्ण स्थान है। इन कहानियों के शीर्षक पूर्णतः प्रेम विषयों से संबंधित है, परन्तु पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादा का निर्वाह भी हुआ है। इन कहानियों में विषय व्यक्ति, परिवार और सामाजिक समस्याओं तक व्याप्त है। कहीं-कहीं इनमें कल्पना वैचित्र्य, कथा सौन्दर्य तथा कलात्मक सरसता भी समाविष्ट हुई है। यह कहानियाँ पूर्ण रूपेण संवेदना पूर्ण है तथा लेखक की सूक्ष्म निरीक्षण कला परिलक्षित होती है। पंत ने भावुकता के फलस्वरूप प्रारम्भ की अवधि में इन पाँच कहानियों की रचना की।

इन कहानियों में लेखक के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी सूक्ष्म परिचय मिलता है। पंत ने अपनी तीव्र अन्तर्दृष्टि में यथार्थता, पात्र और उनके रहस्यमय चरित्रों के भीतर झाँकने का भी प्रयास किया है, इससे चरित्र-चित्रण की सूक्ष्मता दृष्टिगत होती है। पंत ने इन कहानियों में घटनाओं की अपेक्षा पात्रों को अत्यधिक महत्ता प्रदान की है। कहानियाँ आदर्शपरक न होकर यथार्थपरक हैं। घटना और परिस्थिति के विश्लेषण में वर्णनात्मक अंशों का आधिक्य है और क्रमबद्धता एवं सूक्ष्मबद्धता भी निर्वाहित हुई है। पंत की इन पाँच कहानियों में व्यक्ति और परिवार की वास्तविक समस्याएँ, मानव प्रेम, दया, निराशा और संघर्षों के चित्र यथातथ्य अंकित किए गए है। समाज में प्रचलित कुप्रथाओं, कुरीतियों, जर्जर रूढ़िवादी विचारों का परिचय मिलता है जिन पर लेखक ने जहाँ-तहाँ मार्मिक आघात किया है। आलोच्य कहानियों में 'पानवाला' कहानी सर्वश्रेष्ठ रचना है तथा रेखाचित्र के क्षेत्र में एक सफल प्रयास भी है। अन्य चार कहानियाँ क्रमशः 'उस बार', 'दम्पत्ति', 'बन्नू' और 'अवगुंठन' इसी सन्दर्भ में अवलोकनीय है।

'पानवाला' कहानी का नायक पीताम्बर, पंत की स्वयं की अनुभूति का लक्ष्य और पूर्व स्मृति का आधार है। कहानी का नायक लेखक के लड़कपन के चित्र का दुकानदार है। कहानी के रचनाकाल तक में भी (1934-35) उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आया है। वह वैसा का वैसा ही है जैसे कि उसके लिए भविष्य जैसी सुन्दर वस्तु का अविष्कार ही नहीं हुआ है। वह भूत, भविष्य और वर्तमान से पूर्णतया परिचित है। पीताम्बर की दुकान में जो वस्तुएँ बीस वर्ष पहले थीं वही बीस वर्ष पश्चात् भी दिखाई गई हैं। 'दुकानों के बीचों-बीचों वही पुराना लैम्प टंगा था जो उसके किसी मित्र की स्मृति का सूचक था। चिमनी का ऊपरी भाग टिन की पत्ती का बना हुआ था। सामने एक मंझोले आकार का शीशा लगा, जिसके काँच में ध ब्बे चकते पड़ जाने के कारण काँच की पीछे सी बीच में द्रोपदी का तिरछा रंगीन चित्र चिपका हुआ था। अन्दर कमरे में मूँज की एक चारपाई और बिस्तर खूँटी पर टँगा कोट, सिगरेट, दियासिलाई की खाली डिब्बियाँ, एक लोहे की अंगीठी तथा कुछ चाय का सामान रहा था, दुकान के बाहर वही पुराना काँठ का बेंच पड़ा था जिस पर सुबह, सांय, दोपहर हर बात दो-चार दोस्त लोग बैठे गपशप करते, एक दूसरे की खिल्ली उड़ाते और शहर भर की बुराईयों और खराबियों की चर्चा करते थे।[1]

पंत ने पीताम्बर के सुखी जीवन का संकेत भर देकर उसकी अमीरी एवं दरिद्रतापूर्ण विषम परिस्थिति का संवेदनापूर्ण चिन्तन प्रस्तुत किया है। चित्रण के साथ-साथ पंत ने इस कहानी में वैचारिक और सैद्धान्तिक विवेचन भी प्रस्तुत किया है। लेखक का शिल्प मार्मिक प्रसंगों के चित्रण में अत्यधिक सक्षम है। प्रायः वह हृदयस्पर्शी ज्ञात होती है। 'मुक्ति-श्रेणी माँ-बाप उसकी शादी कर गए थे। एक असहाय, मूक, पंगु, अपढ़, अंधविश्वासों से निर्मित माँस की लोथ, निष्प्राण, प्रतिपाण सती का भार उस पर था।[2]

पीताम्बर यौवन के मोड़ पर आकर यौवन की बहार का रसास्वादन ग्रहण करने को उत्साहित रहा है। पीताम्बर में व्याप्त बुरी आदतों (कुटैंबों) का सन्दर्भ देकर लेखक ने इन नीच कामवासनाओं के परिणामों की ओर संकेत करते हुए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। पंत ने नायक की सारी क्रिया-कलापों का रहस्यमयी वर्णन अधिकाधिक गोपनीय शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया है-''और एक रोज दुकान पर पान खाने को आयी हुई एक वैश्या के रूप-सम्मोहन के तीर से बुरी तरह घायल हो उसने शाम के वक्त चुपचाप गल्ले की संदूकची से पाँच रुपयें का नोट चुराकर अपनी विपत्ति निशा की कालिमा को एक रात के कलंक से और भी कलुषित कर डाला।[3] पंत ने पीताम्बर के वास्तविक स्वरूप का जीता-जागता चित्रण प्रस्तुत किया है जबकि पूर्व में पीताम्बर एक-तंबोली के दुकान में पान बेचने के लिए रखा गया था। पीताम्बर जीवन भर विश्व मानव का पुरातन स्वरूप देखता रहता है।

इस कहानी का अन्त अत्यन्त कारूणिक तथा संवेदनापूर्ण है यथा-आज दीवाली के रोज दुकान सजाते हुए उसने एक पुराना मिटी का खिलौना कपड़े की तहों से बाहर निकाल गद्दी के पास रखा है। जिसके लिए पाँच साल पहले यह खिलौना था वह तो रहा नहीं, यह खिलौना रह गया है। 'वह मिट्टी का नहीं था वह मिट्टी का नही था।' ऐसा कहते हुए पीताम्बर उस तरह ठठाकर हँस रहा है।[4]

इस हँसी से पीताम्बर की अन्तर्वेदन का आभास होता है। 'पीताम्बर की इस हँसी में अत्यन्त वेदना भरी पड़ी है। पंत ने 'पानवाला' कहानी के माध्यम से एक व्यक्ति का सम्पूर्ण संकेतात्मक जीवन संस्मरण दिया है। यह कहानी रेखाचित्र के महत्व को उजागर करती है।

पंत की एक और सामाजिक कहानी 'उस बार' है। यह भी प्रेम प्रसंगों से परिपूर्ण है। कहानी चाहे किसी भी प्रसंग से संबन्धित हो वह प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत है। पंत ने प्रेम को तत्वतः एक ही मानते हुए भी भिन्न-भिन्न स्वभावों में भिन्न-भिन्न रूप को माना है। इस कहानी में प्रेम विषयों तथा पात्र एवं पात्राओं के चारित्रिक गुण एवं दोशों के वर्णन के साथ-साथ पुरातन रूढ़ियों का भी यत्र-तत्र सन्दर्भ मिलता है। कहानी की मुख्य नायिका सरला का तथा मुख्य नायक सुबोध का परस्पर प्रेम प्रसंगों से सरला के माता-पिता भली-भाँति परिचित थे, परन्तु इससे वे असंतुष्ट थे। सुबोध सरला के मुख सौन्दर्य के लिए भारी से भारी त्याग और कष्ट उठाने का दावा रखता है। पंत ने इस सामाजिक कहानी के परिवेश एवं वातावरण में भविष्य के लिए समय परिवर्तन की आकांक्षा रखी है। प्रेम प्रसंगों में भ्रामक स्थितियाँ स्वाभाविक हैं, कथानक स्पष्टवादी तथा प्रीतिमूलक है। इस कहानी को रचना तंत्र की दृष्टि से सफल नहीं कहा जा सकता है। कहानी का अंत अत्यन्त आकस्मिक एवं अस्वाभाविक सा लगता है। पंत के प्रीति मूलक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक टिप्पणी से सम्बन्धित अनुपात सहज ही आ गए हैं-'प्रेम तत्वतः एक होते हुए भी विभिन्न स्वभावों में भिन्न रूपों में कार्य करता है।[5] सतीश के प्रेम का प्रवाह शरीर से हृदय की ओर है तथा सुबोध का हृदय से शरीर की ओर। एक फ्रायड का रूप है तो दूसरा प्लेटो का रूप है, एक प्रेमी है तो दूसरा कामी। पंत ने शारीरिक सौन्दर्य का सांगोपांग चित्रण स्वच्छन्दतापूर्वक प्रस्तुत किया है। 'उसकी उभरी छाती, क्षीण कटि प्रदेश सतीश के आनन्द के दो संग्रहालय थे। कोमल उरोज स्तवकों पर गाल रखकर प्रेम की विस्मृति का सुख लूटने का स्वप्न सतीश प्रायः देखा करता था।[6] मानव जीवन का सत्यता के बगैर कोई अस्तित्व नहीं है। जीवन प्रेम और

श्रेय के ज्ञान से ही संचालित होता है। कहानी का लेखक बार-बार अपनी सीमाएँ सूचित करता है, प्रायः भावुकता पूर्ण अवधि में लेखक का कथन असंतुलित और असंयमित हो जाता है। पंत ने 'दंपत्ति' कहानी में पति-पत्नी के पारस्परिक जीवन के सुधरते और विकृत हुए कतिपय दृश्य वर्णित किए हैं। इस कहानी का पात्र पार्वती का स्वामी तथा कहानी की पात्र स्वयं पार्वती है। पूरी कहानी पार्वती के बचपन से उसके यौवन-वैवाहिक जीवन, गृहस्थी तथा बुढ़ापे का सर्वांगीण वर्णन सामाजिक धरातल को दृष्टि में रखते हुए किया है। पार्वती गाँव की विवाहिता कन्या है। बड़े परिवार में उसका पूरा समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत होता है। पिता के घर में गरीबी का आधिक्य था, जबकि पति का घर सम्पन्न था। पार्वती का अहोभाग्य है कि उसे सर्वगुण पति प्राप्त हो गया। उनका आपसी जीवन प्रेममय क्षणों में व्यतीत होता है। पंत ने पार्वती के रंग-रूप, रहन-सहन, गुण-दोष, स्वास्थ्य आदि का चित्रण बड़े उत्तम ढंग से किया है। इसके साथ ही पंत ने पार्वती के कठोर विषाद का भी मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। पार्वती के लिए दो दुख असहनीय हुए, एक तो बीसं-बाईस वर्ष के पुत्र का मस्तिष्क विकृत हो गया तथा अंत में वह भी सदा के लिए इस संसार से विदा हो गया। 'मानव जीवन को रोग से उतनी हानि नहीं होती जितनी कि शोक से होती है। लेखक ने पार्वती के कारूणिक जीवन का वर्णन करते हुए लिखा है कि 'पार्वती ने रोगी के लिए जितने आँसू बहाये हैं, उतनी उसने रोगी की सेवा नहीं की।[7] इस कथन के द्वारा पंत ने सामाजिक रूढ़ि का पर्दाफाश किया हैं इसके अतिरिक्त पंत ने इस कहानी के माध्यम से एक गरीब परिवार की बड़ी छोटी जिम्मेदारियाँ निर्वहन करने का भी चित्रण किया है। इस कहानी में एक मर्यादित महिला की पात्रता पार्वती में दृष्टिगत होती है। इस कहानी में पार्वती एवं उसके पति के बुढ़ापे तथा बुढ़ापे में रोगग्रस्त होने की स्थिति का भी वर्णन किया गया है जैसे-'बीमारी तथा बुढ़ापे के कारण भी पार्वती के स्वामी की स्मृति बहुत ही क्षीण हो गई, स्वभावतः जो होता ही है। कभी-कभी शांत भी हो जाते हैं, स्वप्न को जागृत अवस्था की घटना समझ बैठते हैं। आँखों में शक्तिहीन चमक आ गई है। मस्तिष्क की नाड़ियों का अधिकार भी खो रहे हैं।[8]

इस कहानी में पंत ने बुढ़ापे का ऐसा चित्रण प्रस्तुत किया है जैसे कि वे एक बार वृद्धावस्था के दौर से गुजर चुके हों। 'दम्पत्ति' कहानी की रचना पंत ने एकाग्रमन से की है तथा घटनाक्रम के साथ-साथ परिस्थितियों की सर्जना का भी यथानुरूप वर्णन किया है यह पंत की स्वयं की कथानुभति की परिचायिका भी है। इसमें लोकोक्तियों तथा मुहावरों का भी कहीं-कहीं प्रयोग किया गया है।

'बन्नू' कहानी में पंत ने असहाय और अनाथ महिला कामना का चित्रण किया है। कामना दीनानाथ के छोटे भाई की पत्नी है और पति के देहावसान होने के बाद दीनानाथ के पास आती है। पंत ने कथानक प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि दस वर्ष पूर्व दीनानाथ की पत्नी के स्वर्ग सिधार जाने के फलस्वरूप सांसारिक विरक्तिवश घर से निकल कर आ गया था तब वह अपनी आयु के चालीस सोपान पूर्ण कर चुका था। अपने छोटे भाई का विवाह करने के उपरान्त खेती आदि को भी वह सौंप कर तीर्थ यात्र करने चला गया। वह सन्ततिहीन व्यक्ति था। इस संसार में सन्तान,भार्या तथा सम्पत्ति मानव को बाँधो रखती है। दीनानाथ अपने गाँव से बीस मील दूर कांतारवन में एकलिंग स्वामी की सेवा करने के उद्देश्य से जीवनयापन के लिए गया था। इस कहानी में नैतिक सत्य, आचार-व्यवहार, नियमों, बंधनों की ओर इंगित किया गया है। परिश्रमी दीनानाथ और उसकी एकलिंग स्वामी के प्रति सेवा, भाव के कारण दीनानाथ का बाग फल-फूलों से समृद्ध हो जाता

है। उसने यात्रियों के विश्राम हेतु अनेक नई झोपड़ियाँ बनाई, जिससे उसकी प्रसिद्धि चारों ओर हो गई। कामना व उसकी बच्ची कला भी तीर्थ यात्रियों की सेवा एवं भजन-पूजन में व्यस्त रहती थी। कला के आने से दीनानाथ की झोपड़ी में चन्द्रोदय हो गया।

इस कहानी में प्रकृति चित्रण भी बखूबी किया गया है। 'शारद की उज्ज्वल, स्वप्नमयी चाँदनी और पौष के कोमल दिनमानों से उसका एक अज्ञात, गूढ़, साहचर्य था, उसकी कल्पना चुपचाप उसमें मिल जाती।' इस कहानी का मुख्य नायक 'विनोदानन्द' जो 'बन्नू' के नाम से जाना जाता है। एकलिंग स्वामी का शिष्य है। 'बन्नू' के माँ-बाप उसे दस वर्ष की आयु में एकलिंग को सौंप गए थे। गुरु की कृपा से धर्म, शास्त्र, वेदान्त, नीति, दर्शन सभी में वह पारंगत हो चुका था। कामना भी धर्म निष्ठ एवं भावगत प्रेमी स्त्री है वह भी बेटी कला के साथ सदैव एकलिंग स्वामी के दर्शनार्थ जाया करती थी। कांतारवन में बन्नू तथा कला का एक-दूसरे को परस्पर निहारना, एक दूसरे की भाँति वेश-भूषा, शारीरिक अंगों की बनावट आदि का अवलोकन करना, एक दूसरे को देखकर संतुष्टि प्राप्त कर लेना मुख्य क्रियाएँ हैं। पंत ने मौलिकता को देख कर उसे कहानी के रूप में संवार दिया है।

पंत ने इस कहानी में माध्यम से अपने मनोवैज्ञानिक विवेक का अच्छा परिचय दिया है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पंत की मान्यता है कि बुद्धि, राग और संकल्प तीन वस्तुओं से निर्माण होता है। इसका दूसरा रूप भी पंत ने दिया है वह ज्ञान, भावना और प्रेरणा। बन्नू ज्ञान के क्षेत्र में तो पर्याप्त विकसित था परन्तु राग तत्व के सन्दर्भ में सुप्त ही था। इस कहानी के माध्यम से पंत ने रूढ़ियों का भी खण्डन किया है। इसके साथ ही अनमेल विवाह का सन्दर्भ भी पंत ने प्रस्तुत किया है।

आलोच्य कहानी में पंत ने प्रकृति के संपूर्ण पहलुओं का सन्दर्भ यथा स्थान वर्णित किया है जिसके फलस्वरूप कहानी सामाजिक होते हुए भी प्रकृति चित्रण के पूर्ण रूपेण संबद्ध है। इस कहानी के द्वारा पंत की कहानी कला को सराहा जा सकता है।

'अवगुंठन' पंत की पाँच कहानियों में अन्तिम कहानी है। इस कहानी में जीर्ण सामाजिक रूढ़ियों पर मार्मिक प्रहार किया गया है। इस कहानी का नायक रामकुमार पूर्वजों की रस्म तथा रीति-रिवाजों का खंडन करते हुए विरोध करता है। पर्दाप्रथा से वह अत्यधिक घृणा करता है 'वह उसे आदिमयुग की आँखों पर पड़े हुए अंधकार का चिन्ह समझता था जैसा कि प्रत्येक शिक्षित युवक सोचता है रामकुमार भी अविद्या के अंधेरे में पले हुए इन रीति-रिवाजों के डैने तोड़-मरोड़ कर समाज के जीर्ण समाज के जीर्ण वृक्ष के टूटी टहनियों से उनकी उलूक बस्तियों को जड़ से उखाड़ फेंक देना अपना कर्त्तव्य समझता था पर समय पर कुछ भी न हो सका।[9]

इस कहानी में राजकुमार की माँ ने परदे की प्रथा से उठकर अपनी बहू को ऊँचा स्थान दिया। पंत ने मुख्य पात्र रामकुमार की इच्छा के अनुरूप ही पुरानी रूढ़ियों को जड़ समेत उखाड़ फेंकने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त साम्यवाद के द्वारा ही मानव जाति के कल्याणार्थ सत्य, सरल, संगत तथा सत्य पथ को प्राप्त किया जा सकता है, इस मान्यता को पुष्ट किया है। पुराणों में सुख, स्नेह, सौहार्द और सहवास के लिए कोई सामग्री अवगत की है तो वह स्त्री है। प्रत्येक युग के सामने सत्य का जो आदर्शरूप प्रस्फुटित तथा

विकसित हुआ है उसे पंत की युग दृष्टि में काल्पनिक ही माना जा सकता है। पंत ने लिखा है कि भावी परिणाम उत्तम हो सकते हैं, क्योंकि परिवर्तन का अर्थ ही विकास है और विकास समय के अन्तराल से परिवर्तित होता रहता है।

इस कहानी में पंत ने लिखा है कि जब तक हृदय एवं आत्मा से अवगुंठन नहीं हटाया जाता, तब तक वास्तविकता का आभास होना कभी भी सम्भव नहीं है। इस कहानी में पुश्तैनी रूढ़ियों को हटाकर रूढ़िवादिता के फन्दे में न पड़कर नई आधुनिकता के पाठ का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। भारतीय नारी का कर्त्तव्य तथा उसके अनुरूप भारतीय नारी में विशेष महत्त्व दिया गया है। जब तक मानव हृदय में रूढ़िवादिता की कलुषित गंदगी भरी रहेगी और इन्हीं बातों से सम्बन्धित आत्मा व हृदय अवगुंठित रहेगा, तब तक सत्य का ज्ञान नहीं होगा। सत्यता के लिए अनिवार्य है कि पुरानी जर्जर रूढ़ियों को समूल नष्ट किया जाय।

पंत की इन पाँच कहानियों का हिन्दी साहित्य जगत् में विशेष स्थान है। इनमें विचारों की परिपक्वता तथा उम्र के अनुसार सरलता भी है। ये सभी कहानियाँ शिष्टता एवं सभ्यता से प्रेरित है तथा मानव-जीवन के लिए एक आदर्श स्वरूप हैं। प्रत्येक पाठक जब इन कहानियों का अध्ययन करेगा तो जहाँ वह पुरातन रूढ़ियों, संकीर्णताओं, बुरी आदतों का त्याग करेगा वही दूसरी ओर एक उज्ज्वल भविष्य के लिए शिष्टता, सभ्यता तथा नवीन विकासवादी विचारों को ग्रहण करेगा।

सन्दर्भ

1. पाँच कहानियाँ, सुमित्रा नन्दन पंत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-12
2. पाँच कहानियाँ, सुमित्रा नन्दन पंत, पृष्ठ-12
3. सुमित्रा नन्दन पंत, ग्रन्थावली (खण्ड-6) पाँच कहानियाँ, पृष्ठ-7
4. सुमित्रा नन्दन पंत, ग्रन्थावली (खण्ड-6) पाँच कहानियाँ, पृष्ठ-7
5. सुमित्रा नन्दन पंत, पाँच कहानियाँ, पृष्ठ-34
6. सुमित्रा नन्दन पंत, पाँच कहानियाँ, पृष्ठ-35
7. सुमित्रा नन्दन पंत, पाँच कहानियाँ, पृष्ठ-62
8. सुमित्रा नन्दन पंत, पाँच कहानियाँ, पृष्ठ-66-67
9. डॉ0 शान्ति जोशी, 'सुमित्रानन्दन पंत-ग्रन्थावाली (खण्ड-6) पाँच कहानियाँ, पृष्ठ-37